Hindi Articles .....

आदमी और प्राणी खानेवाला पेड़

Digvijay D. Gaigole
V th (Jasmine)

अफ्रिका के जंगल के कांगों के खोरे में विषयकृतीय पठारी भागों में आदमी और प्राणी को खाने वाले यह भयंकर पेड़ दिखाई देते हैं। इनकी इस भयानकता की वजह से इस जंगल की इस प्रजाती के पेड़ काट दिए गए हैं। अभी सिर्फ पर्यटकों के लिए कुछ पेड़ रखे हुए हैं। जो पेड़ रखे हैं उनको कुपन लगा के यहाँ सुरक्षा के लिए गार्ड रखे हुए हैं। जब इस पेड़ के पास से कोई आदमी या प्राणी गुजरता है तो इस पेड़ की फाँदियाँ उस आदमी या प्राणी की तरफ झुकती हैं और उसे उठा लेती हैं। जब कोई मरा हुआ पक्षी इस पेड़ की फेंका तो जैसे बच्चे गेंद को उपर फेकने के बाद पकड़ लेते हैं वैसे ही यह पेड़ मरे हुए पक्षी को फाँदियों की सहायता से पकड़ लेता है। इस गुणधर्म की वजह से आदमी या प्राणी इस पेड़ के पास से कभी गुजरता नहीं और पक्षी भी इस पेड की तरफ कभी जाता नहीं।

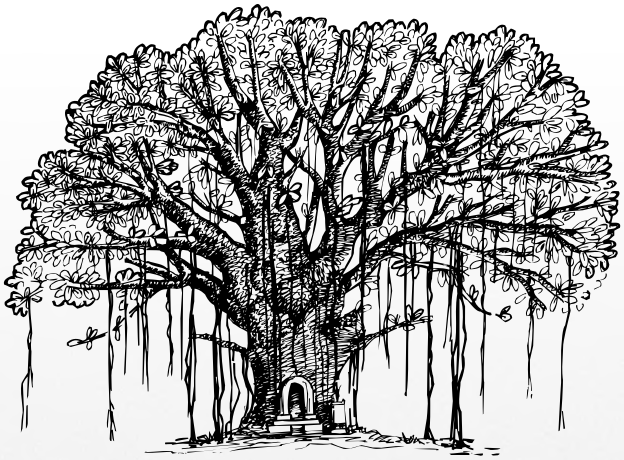

अंकों का व्यवहार

Siddhi Mundode
VIII th B

तीन रंग का तिरंगा फहराएं
एक स्वर में राष्ट्रगीत गाएं।

नौ खिलाड़ी खो– खो में छाए
सात दिनों का सप्ताह कहलाए।

पाँच उंगलियां करे कमाल
दो पहियों का फैला जाल।

छह पैरों में धूमे तिलचट्टा,
दस से दहाई, गणित हो पक्का।

चार दिशाओं में हुआ प्रभात
छह ऋतुएं जीवन की सौगात।

उल्टे - पुल्टे समाचार

Rakhshanda Anjum
VIII th B

सुप्रभात आज हम आपको सब्जी मण्डी में ले चलते हैं। यहाँ कद्दु और लौकी के बीच में युद्ध हो रहा है। युद्ध के कारण सामने रखे बर्फ में आग लग गई। आग इतनी गंभीर थी कि उसे पेट्रोल डालकर बुझाया गया। आग लगने के कारण 20 भिंडी और 30 संतरे घायल हो गये और 15 टमाटर 10 आलू मर गये। मरे हुओं को अस्पताल में पहुँचा दिया गया और घायलों को शमशान घाट में दफना दिया गया। अभी – अभी पता चला है कि मुंबई में बारिश के साथ कॉफी गिरने की संभावना है सभी से निवेदन है कि अपने दरवाजे के पास एक कप और बिस्किट लेकर बैठ जाएँ।

पढाई - पढाई

Nikita Patil
....

पढाई – पढाई सिखाती भलाई
दोस्तों इससे कभी ना भागो
पढाई करने जल्दी जाओ।

अज्ञान का जो है अंधियारा
ज्ञान से हो जाये उजियारा।।

पढ़ाई से मिले है ज्ञान
सबसे आगे है विज्ञान।

जीवन में आयेगा ऐसा पर्व
सब को होगा तुमपे गर्व।।

भारत को होगा तुमपे गुमान
बन जाओगे जब चतुर सुजान।।

ना कहेगा कोई आतंकवादी,
सब कहेंगें जय जवान, जय किसान।

इनसान

Munuzza Fatima
V th C

सत्य व ईमानदारी का आचरण किए बिना हमारे विचार कमजोर शक्तिहीन और चंचल होते हैं जो स्थिर नही रह पाते। ऐसे विचार सदैव भय, संशय, भ्रम, संकोच आदि विकारों के घेरे में पड़े रहते हैं। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि ऐसे विचारों को मन में स्थान न देकर अपने को जो योग्य लगे वैसा काम करना चाहिए।

क्या बेईमानी, अन्याय और झूठ की बुनियाद पर खड़ी की गई इमारत अधिक समय तक टिक सकेगी ? यह इमारत तो सच नामक हवा का एक झोंका आते ही ढह जाएगी। ताश के पत्ते की तरह बिखर जाएगी। आज हम ईमानदार और बेईमान इंसान के बीच फर्क मालूम करेंगें।

ईमानदार इंसान :–

1) सदा खुश, पुरसुकून, खुश मिज़ाज और हमेशा चिंतामुक्त है।
2) किसी से भी आंखों में आखों डाल कर बात करता है।
3) यह आत्मविश्वास से भरी बातें करता है।
4) बोलने में कम और काम करने में ज्यादा ध्यान देता है।
5) यह विश्वासी होता है।
6) समाज में सम्मानित होता है।

बेईमान इंसान :–

1) सदा डरा सहमा रहता है और ज्यादा तर चिंता में रहता है।
2) किसी से आँख मिलाकर बात नही कर सकता।
3) कमज़ोर आत्मा और कमज़ोर मन वाला होता है।
4) बार बार झूठी कसमें ईश्वर के नाम पर खाता है।

5) यह अविश्वासी होता है।

6) समाज से अपमानित होता है।

आप को ईमानदारी और बेईमानी का अंतर मालूम हुआ। जिसे पढ़ कर आप ईमानदारी पर ध्यान रखेंगे।

अब आप जल्द ही यह सोच लें कि आप कैसे हैं। कभी भी जीवन में बेईमानी की थोड़ी सी भी अपने मन में जगह दी है तो उसे तुरंत छोड़ दे। किसी ईमानदार इंसान का नज़रिया कैसा होता है यह समझिये उसके गुणों को अपनाइये।

न्युटन

Apurva Nighane
V th C

न्युटन का जन्म 25 दिसंबर 1642 को इंग्लैंड में हुआ था। जन्म से पहले ही पिता की मृत्यु हो जाने के कारण उसका पालन – पोषण बडी कठिनाइयों में हुआ। न्युटन सीधे स्वभाव का शरमीला लडका था। अकेले ही खेलना और हाथों से लकडी या मिट्टी से कुछ न कुछ बनाते रहना उसका स्वभाव था। गाँव की पाठशाला से प्रारंभिक शिक्षा पुरी करने के बाद उसे शहर के स्कुल में पढ़ने भेजा गया। विद्यालय की पढाई में न्युटन तेज नहीं था। उसे इधर – उधर की पुस्तकें पढना अच्छा लगता था। एक दिन पढ़ने – लिखने में तेज एक लड़के ने उसकी पिटाई कर दी। न्युटन ने भी उस लड़के को मारपीट कर बदला ले लिया। और तभी न्युटन ने निश्चय कर लिया कि वह उस लडके से पढाई में भी जीतेगा। और पढ़ाई मन लगाकर की और वार्षिक परीक्षा में पहला स्थान प्रदान किया। ऐसे थे ये न्युटन। जो ठान लेते ये वो पुरा करते थे।

मेरी पुस्तक

Radha S. Adulkar
VII th A (Rose)

पुस्तक है ज्ञान का स्वरूप
वे देती हमें शिक्षा भरपूर।
अच्छे विचार हमें सिखलाती,
नई – नई बातें हमें बताती।।

हमें देती वो नूतन ज्ञान,
सदा करो पुस्तक का सम्मान।
मन लगाकर तुम पढाई करो,
खुशियों से अपनी झोली भरो।।

खूब पढ़ोगे ध्यान पढ़ेगा,
अपमान करोगे, पाप मिलेगा।
पुस्तक है सभी का मित्र,
करती हमारा मन पवित्र।।

अगर तुम्हें बनना है विद्वान,
तो करो अपना झूठ कुर्बान।
पुस्तक ने दिया यह ज्ञान,
मेरी पुस्तक बड़ी महान।।

हाय रे पढ़ाई

Divya Mundhada
VI th B

हाय रे पढ़ाई, हाय रे पढ़ाई
न जाने कहां से आई, न जाने किसने बनाई
मास्टरजी कहते,
बेटा, तू कर ले पढ़ाई, नहीं तो करूँगा पिटाई
घर में मम्मी कहती,
बेटी, तू कर ले पढ़ाई, मै तुझे दूंगी मिठाई
पापा कहते,
बेटा, तू कर ले पढ़ाई, नहीं तो बर्बाद हो जाएगी
मेरी साल भी की कमाई
हाय रे पढ़ाई, हाय रे पढ़ाई
नानी कहती,
बेटा, तू कर ले पढ़ाई मैं तुझे खिलाऊँगी मलाई
दोस्त कहते, अरे क्या करनी पढ़ाई
वही पुरानी कहानी मुझे सुनाई
रात में मच्छर कान में कहते,
अरे दिव्या कर ले पढ़ाई या फिर लेके आएगी परिक्षा में गोलाई
आज रहस्य पता चला
अरे! ये तो दोस्त है पढाई
ले जाये बहुत ऊँचाई
वाह रे पढ़ाई, वाह रे पढ़ाई

A to Z सहज

Riya Pankaj Loya
II nd (Lily)

। क लड़की थी।
ठ मार नहीं पड़ती थी।
ह्ब मा उसका नाम था।
क स्को डान्स करती थी।
ऋ मामी क्रीम लगाती थी।
ॡ वाय. जे. सी. में पढ़ना चाहती थी।
ळ ना तेरी गली में फिल्म देखती थी।
ऋ एम. टी घड़ी पहनती थी।
ए नेमे बार – बार देखती थी।
श्र के कंपनी का स्कर्ट पहनती थी।
ज्ञ तकी के साथ में रहती थी।
ऽ एल. बी. पढ़ना चाहती थी।
ड एस. सी. की किताब पढ़ती थी।
छ टी रामाराव की बेटी थी।
ट ए ओए गाना गाती थी।
च टी. उषा जैसी दौड़ती थी।
फ में खड़ी रहती थी।
ट टी. ओ से डरती थी।
ॆ टी. स्टँण्ड पर इंतजार करती थी।
ज ना मुनीम की फैन थी।
ॠ सकी चोटी लम्बी थी।
ट सी. डी. देखती थी।
ॅ उसकी जान थी।
ग रे निकालना चाहती थी।
ल योलीन बजाती थी।
ॅ ब्रा जैसी दिखती थी।

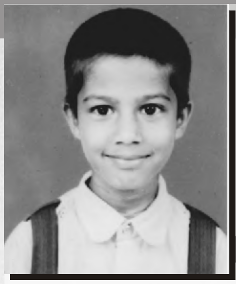

स्नोव्हाईट और सात बौने

Mohit K. Bokriya
V th C

एक बार एक राजा था उसकी एक बेटी थी। उसका नाम स्नोहवाईट था उन दिनों राजा की पत्नी की तबियत ठीक नहीं थी जल्दी वह चल बसी। राजा ने दुसरी शादी की तो उसकी रानी दुनियाँ में सबसे सुंदर थी। उस रानी के पास एक जादुई शीशा था जो बोलता था। वह उससे रोज़ पूछती थी कि दुनिया में सबसे सुंदर कौन है। वह शीशा बहुत दिनों तक यह कहता रहा कि तुम ही सबसे सुंदर हो पर जब स्नोव्हाईट बडी हुई तो वह बहुत सुंदर दिखने लगी तो शीशे ने वही कहा जो सच्चाई थी कि सबसे सुंदर स्नोव्हाईट है।

रानी ने उसके एक सैनिक को पैसे देकर कहा कि तुम जंगल में ले जाकर उसे मार दो। स्नोव्हाईट भागते हुए जब जंगल में पहुंची तो उस सैनिक ने सब सच – सच उसे बता दिया और कहा तुम बहुत दुर जाओ वरना रानी तुम्हे कैसे भी पकड कर मरवा देगी तो चलते चलते वह बहुत दूर जा पहुंची एक पेड़ के नीचे उसकी आँख लग गई।

वह जब उठी तो उसे एक छोटा घर नजर आया वह घर के अंदर गई तो उसे एक टेबल पर सात प्लेट रखी दिखी तभी वहां से सात बौने आए। उन से स्नोवाईट की बहुत अच्छी दोस्ती हो गई। तभी कुछ दिनों बाद स्नोव्हाईट बीमार पड़ गई। तभी जंगल में एक सुंदर राज कुमार आया और उसने उसका हाथ स्नोव्हाईट के शरीर पर से घुमाया और स्नोव्हाईट ठीक हो गई।

उन दोनों ने शादी कर ली और हंसी खुशी चल दिए।

चतुर चित्रकार

Payal G. Sharma
V th C (Jasmine)

चित्रकार सुनसान जगह में, बना रहा था चित्र
इतने ही में वहाँ आ गया, यमराज का मित्र।
उसे देखकर चित्रकार के तुरंत उड़ गए होश
नदी पहाड़ पेड़ पत्तों का रह न गया कुछ जोश

फिर उसको कुछ हिम्मत आई देख उसे चुपचाप
बोला – सुंदर चित्र बना दूँ बैठ जाइये आप
उकड़ – मुकड़ बैठ गया वह सारे अंग बटोर
बड़े ध्यान से लगा देखने चित्रकार की ओर

चित्रकार ने कहा हो गया आगे का तैयार
अब मुँह आप उधर तो करिए जंगल के सरदार
बैठ गया वह पीठ फिराकर चित्रकार की ओर
चित्रकार चुपके से खिसका जैसे कोई चोर।
बहुत देर तक आँख मूँदकर पीठ घुमाकर शेर
बैठे – बैठे लगा सोचने इधर हुई क्यूँ देर।।

झील किनारे नाव लगी थी एक रखा था बाँस
चित्रकार ने नाव पकड़कर ली जी भर के साँस
जल्दी– जल्दी नाव चलाकर निकल गया वह दूर

शेर बहुत खिसियाकर बोला नाव जरा ले रोक
कलम और काग़ज़ तो ले जा रे कायर डरपोक।
चित्रकार ने कहा तुरंत ही रखिए अपने पास
चित्रकला का आप कीजिए जंगल में अभ्यास।।

समूह गीत
यह देश है ....

Saurabh Anasune
V th A

यह देश है वीर जवानों का
अलबेलों का, मस्तानों का
इस देश का यारों क्या कहना
यह देश है दुनिया का गहना

यहाँ चौड़ी छाती वीरों की
यह भोली शक्लें हीरो की
यहाँ गाते हैं रांझे मस्ती में
मचती है धूमें बस्ती में। ।2। ।

पेड़ों से बहारें झूलों की
राहों में कतारें फूलों की
यहाँ हँसता है सावन बालों में
यहाँ खिलती हैं कलियाँ गालों में। ।3। ।

कहीं दंगल शोख जवानों के
कही करतब तीर कमानों के
यहाँ नित – नित मेले सजते हैं
नित ढोल और ताशे बजते हैं। ।4। ।

दिलबर के लिए दिलदार हैं हम
दुश्मन के लिए तलवार हैं हम
मैदान में अगर हम डट जाएँ
मुश्किल है कि पीछे हट जाएँ। ।5। ।

जिवनाचे रंग

Prateek Mudhda
VII th A

हातोचे बळ जवळ असतांना
निराश कधी व्हायचे नसते
गत दुःखीची उजळणी करत
हताश कधी व्हायचे नसते

यश पदरात पडत नाही
म्हणुन कधी रहायचे नसते
नव्या जोमाने सुरूवात करून
जीवनाची दिशा बदलायची असते

हाताचा पसा दुसऱ्यासमोर धरून
लाचारी कधी स्विकारायची नसते
संकटची तना न बाळगता
कष्टाने त्यावर मात करायची असते

दिवसभर नुसते बसून आपली
रहकथा कधी गायची नसते
आत्मविश्वासाने काम करून
दिवसाची वाटचाल करायची असते

अद्याचे जीवन आनंदात जाण्यासाठी
आजच आघात सोसायचे सुसतात,
अनुभदातुन आलेल्या शहाणपणातुनच
जीवनाचे रंग फुलवायचे असतात

कविता

Saurabh Anasune
V th A

असावे घरटे अपुले छान.....
असावे घरटे अपुले छान ।।धृ0।।
पुढे असावा बागबगीचा
वेला मंडपी जाईजुईचा
आम्रतरूवर मधुमासाचा

फुलावा मोहर पानोपान ।।1।।
संगमरवरी ती पुष्करणी
त्यात असावे गुलाबपाणी
पाण्यामुधुनी कारंज्याची

फुटावी सुरेल सुंदर तान ।।2।।
फुलासारखे मूल असावे
नित्य चादणे घरी हसावे
तीर्थ रूपी ओवाळावे
आपुले जीवन पंचप्राण ।।3।।

जीवनाची सुरूवात

Sneha Patil
VI th A

जीवनाची सुरूवात होते अपघशापासेन
त्यात यशाचा किरण येतो प्रयत्नापासून
प्रयत्न सफल होतात कष्टापासून,
कष्टाची सुरूवात होते आपल्यापासून
मग का मागे राहतो आपण सुरूवातीपासून?

सूक्तय :

Shraddha Loybari
IV th C

विद्या ददति विनयम्।
विद्यार्थी सुखम् त्यजेत।
विद्यार्थीः पशुः।
मानो ही महताम् घनम्।
सत्यड गतिम् गच्छा।
कुपुत्रेण कलम् नश्यति।
पापाथ परपीडनम्।
सत्यम् वद।
असत्यम् मा वद।

ओळखा पाहू ?

- बटाट्याला ताप आल्यास काय म्हणलं ?– आलुबुखार
- बनवायला सागणारे फळ – बनाना
- घोरत पडलेला प्राणी – घोरपड
- तळमळणारा प्राणी – तरस
- पाऊस आवडणारा प्राणी – रेनडिअर
- सर दुःखात आहेत हे कसे सांगाल ? – सरगम
- 'नखी नावाच्या मुलीला सोमवारी मुलगा झाला' कसे सांगाल ?– नेल्सन मंडेला

यश - अपयश

Rajesh P. Gawhade

अपयश ही एक अत्यंत वाईट कनोशी वाटणारी पण वास्तव गोष्ट आहे. ज्याच्या वाऱ्याला सुध्दा कुणी उंभ राहू नये, इतकी अपयश ही गोष्ट वाईट आहे का ? मुळीच नाही! वस्तुस्थिती ही आहे कि, अपयशाकडे वहाण्याचा बहाण्याचा दृष्टीकोन यामुळे अनेक व्यक्ति दररोज आत्महत्या मार्गाने विनाकारण जाऊन, मृत्युला, कवटाळत आहेत.

यश म्हणजे चांगल अपयश म्हणजे वाईट, असा एक विचित्र अमज पूर्वापार चालत आला आहे. यशस्वी व्यक्तिला अकाय व अपयशी व्यक्तिकडे पाठ करणे ही अमाजाची रजिच आहे. माणसाच्या आयुष्यात अपयश सतत मार्गदशकाची भूमिका वठवत असते. अपयश म्हणजे ध्यये प्राप्ती साठी केलेला प्रमाणित धडपडीतून आलेला अमूल्य अनुभव व यश म्हणजे त्या अनुभवातून साध्य झालेली ध्यये प्राप्ती यश प्राप्ती साठी मार्गकृमणा करत असतांना येणारी लहान मोठी अपयश पचवून सतत ध्येयाकडे खंबीरपणे वाटेचाल करणारी व्यक्ति खऱ्या अर्थाने यशस्वी खरंतर अपयाशाच्या पोटातच यश दबा धरून बंसल असत पण अपयशांच्या धसळयोन व त्यामुळे निर्माण झालेल्या नकारात्मक विचारसरणी मुळे आपण मिळवलेल्या यशाला न ओळखून त्यांच्याकडे पाठ फिरवून बसतो. जर 90 टक्के गुण मिळवण्या साठी प्रयत्न केले असतील तर काही कारणामुळे 70 टक्के चा गुण मिळले तर त्या तथाकथीत अपयशांच भुत विद्यार्थी च्या मानमुटोवर एवढया मोठया प्रमाणात बसतं. की आपण 70 टक्के गुण मिळवण्यात यशस्वी झाले आहोत हे पूर्णपणे विसरून जातात. अनेकांच्या बाबतीत हा अपयशाचा झटका त्यांना आत्महत्यापर्यंत घेऊन जातो.

असे होता कामा नये म्हणून अपयशोज आयुष्य कधी संपत नाही वाया जात नाही उलट अपयशाच्या अनुभवातून आयुष्य जीवन समृध्द होते। यश अपयश एकाच जाण्याच्या घेम बाजु आहेत अपयशाने खचून जाण्यात काही अर्थ नाही.

अपयश म्हणजे आपल्या आतीक उणिवा ओळख्यासाठी आलेली संधी त्याच प्रमाणे आपल्या चुका सुधारण्याची संधी असते आपल्या उणिवांवर आत करणे ज्यांना जमले. त्यांच्या साठी अपयश यशाचे पाहिली पायरी ठरते. आपल्या जीवनात

आपणही अजुन बरेच काही करू शकतो. गरज आहे आत्मविश्वासाची व अथक अचूक प्रयत्नांची म्हणुन अपयशाने खचून न जाता. अपयश पचवून अपयशातून यशाकडे वाटचाल कशी होईल ? यासाठी प्रयत्न करत राहणे गरजेचं आहे.

'' आणि दाखवून दे जगांला
सूर्य कधी होत नसतो अस्त,
तळपतो तो अधिक प्रखरतेने
अस्तित्व त्याचे फार जास्त ''